प्रो० हरे कृष्ण आर्य, एसोसिएट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, जे० एन० कॉलेज, मधुबनी।

APRIL 2014
M T W T F S S
1 2 3 4 5 6
7 8 9 10 11 12 13
14 15 16 17 18 19 20
21 22 23 24 25 26 27
28 29 30

05
WEDNESDAY • MARCH

हिंदी नाट्य-साहित्य के विकास का इतिवृत्त
आकलन

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से समस्त हिंदी नाट्य-साहित्य के विकास को पाँच चरणों में विभाजित किया जा सकता है :—

(1) भारतेन्दु-युग से पूर्व नाटक
(2) भारतेन्दु-युग के नाटक
(3) प्रसाद-युग के नाटक
(4) प्रसादोत्तर युग के नाटक और
(5) स्वातंत्र्योत्तर नाटक।

भारतेन्दु-युग से पूर्व के नाटक :

भारतेन्दु युग से पूर्व सतरहवीं शताब्दी से ही हिंदी में नाटकों की रचना होने लगी थी। परन्तु, उनमें नाटकीय तत्वों का अभाव है। इस संदर्भ में देव कवि कृत देवमाया प्रपंच, ब्रजवासीदास कृत प्रबंध चन्द्रोदय, बनारसीदास चतुर्वेदी कृत समयसार, निवाज कृत शकुन्तला, हृदयराय कृत हनुमन्नाटक, प्राणचन्द चौहान कृत रामायण महानाटक आदि नाटकों का उल्लेख आवश्यक है। भारतेन्दु के पूर्व केवल दो ही मौलिक नाटक लिखे गये। जिनमें पात्रों के समुचित समावेश के कारण नाटकीय तत्वों का संरक्षण हो पाया है। वे नाटक हैं — रीवा नरेश महाराजा विश्वनाथ सिंह का 'आनंद रघुनंदन' तथा भारतेन्दु के पिता गोपालचन्द जी का — 'नहुष'। डॉ० गुलाब राय, बाबू ब्रजरत्नदास और डॉ० बच्चन सिंह "आनंद रघुनंदन" को हिंदी का प्रथम मौलिक मानते हैं, परन्तु भारतेन्दु 'नहुष' को हिंदी का प्रथम नाटक मानते हैं।

भारतेन्दु युगीन हिंदी नाटक :

हिंदी में खड़ी बोली के प्रथम मौलिक नाटककार होने का श्रेय भारतेन्दु बाबू को ही प्राप्त है। भारतेन्दु के नाटकों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है — अनूदित नाटक एवं मौलिक नाटक। मौलिक नाटकों में वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, चन्द्रावलीनाटिका, विषस्य विष मौषधम्, भारत दुर्दशा, नील देवी, अंधेर नगरी, प्रेम योगिनी एवं सती प्रताप और अनूदित नाटकों में

विद्यासुन्दर, पाखण्ड विडम्बन, धनंजय विजय, कर्पूरमंजरी, मुद्राराक्षस, सत्य हरिश्चन्द्र, दुर्लभ बंधु तथा भारत-जननी (अपूर्ण)।

भारतेन्दु की प्रेरणा से इसी युग में लाला श्रीनिवास के तप्ता-संवरण, रणधीर प्रेममोहिनी, संयोगिता स्वयंवर, गोकुलचन्द कृत बूढ़े मुँह मुहाँसे लोग चले तमासे, राधाकृष्ण दास के दुःखिनी बाला, महारानी पद्मावती अथवा मेवाड़ कमलिनी, महाराणा प्रताप, चौधरी बद्रीनारायण प्रेमघन रचित वीरांगना रहस्य, अम्बिकादत्त व्यास कृत गो संकट नाटक तथा प्रताप नारायण मिश्र के गो संकट नाटक, भारत दुर्दशा आदि मौलिक नाटक की रचना हुई।

ये मौलिक नाटक या तो सामाजिक समस्याओं को लेकर चले हैं या देशप्रेम के भाव जगाते हैं। अभिनेयता की दृष्टि से भी इन नाटकों का महत्त्व है।

द्विवेदी-युग के नाटक :

यों तो बाह्य दृष्टि से द्विवेदी युग में नाट्य रचना की दिशा में काफी उत्साह दिखाई पड़ता है, परन्तु मौलिक साहित्यिक नाटकों का इस युग में अभाव ही दिखाई पड़ता है। हरिऔध ने प्रद्युम्न विजय व्यायोग तथा रुक्मिणी परिणय लिखकर हाथ आजमाया। लोचन प्रसाद पाण्डेय, मैथिली शरण गुप्त, वियोगी हरि जैसे कवियों और विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, चतुरसेन शास्त्री, बेचन शर्मा उग्र, प्रेमचन्द, सुदर्शन जैसे कथाकारों ने भी 'साहित्य सेवा' चन्द्रहास, तिलोत्तमा, अनघ, छद्मयोगिनी नाटिका, भीष्म, अत्याचार का परिणाम, उत्सर्ग, संग्राम, कर्बला, प्रेम की वेदी, महात्मा ईसा तथा अंजना नाटकों की रचना की परन्तु इस क्षेत्र में इन सभी लोगों की प्रतिभा अनुपयुक्त सिद्ध हुई।

इस युग में पौराणिक नाटकों की एक लम्बी शृंखला मिलती है, परन्तु सभी नाटक सफल नहीं हैं। पौराणिक नाटकों में गौरचरण गोस्वामी का अभिमन्यु वध, माखनलाल चतुर्वेदी का कृष्णार्जुन युद्ध, तुलसीदत्त शैदा का जनकनंदिनी नाटक तथा गोविन्द वल्लभ पंत का वरमाला बहुत प्रसिद्ध हुआ। इस युग में पारसी थियेटर के लिए नाटक लिखनेवाले नाटककारों में राधेश्याम कथावाचक, नारायण प्रसाद बेताब, आगा हश्र कश्मीरी, हरिकृष्ण जौहर आदि प्रमुख हैं।

प्रसाद युग के नाटक :

हिंदी नाट्य साहित्य के अभिनव मंदिर के निर्माता तथा प्रतिमा प्रतिष्ठापक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र थे, तो जयशंकर प्रसाद उस प्रतिमा के प्राण-प्रतिष्ठापक

तथा मंदिर के दिव्य शिखर के स्रष्टा थे। उन्होंने कुल तेरह विविध विषयक नाटकों की रचना की थी। उनके नाटक हैं - सज्जन, कल्याणी-परिणय, प्रायश्चित, राज्यश्री विशाख, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, कामना, एक घूँट, करुणालय और जुलस्वामिनी। उदात्त सांस्कृतिक चेतना, प्रखर राष्ट्रीय चेतना, अतीत गौरव, मानवतावादी करुणा और काव्यात्मकता के संकेत इन नाटकों में विद्यमान हैं।

प्रसादोत्तर हिंदी नाटक :

प्रसादोत्तर ऐतिहासिक नाटककारों में हरिकृष्ण प्रेमी का नाम अग्रगण्य है। उन्होंने रक्षाबंधन, शिवा साधना, प्रतिशोध, आहुति, उद्धार आदि लगभग बीस नाटकों की रचना की। वृन्दावन लाल वर्मा ने झाँसी की रानी, पूर्वा की ओर और ललितविक्रम आदि नाटक लिखे। हिंदी समस्या नाटकों का प्रणयन सर्वप्रथम पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र ने सन् १९३० से १९३३ तक उन्होंने संन्यासी, राक्षस का मंदिर, मुक्ति का रहस्य, राजयोग, आधी रात तथा सिंदूर की होली नामक समस्या नाटकों की रचना की। उन्होंने नारद की वीणा, गरुड़ध्वज, वत्सराज, मृत्युंजय, चक्रव्यूह, जगद्गुरु, वितस्ता की लहरें एवं चित्रकूट में भारतीय संस्कृति का शुभ्र चित्र प्रस्तुत किया है। ऐतिहासिक सामाजिक नाटककारों में सेठ गोविन्द दास प्रमुख हैं। उन्होंने कुलीनता, हर्ष, शशिगुप्त, शेरशाह अशोक, सिंहल द्वीप, विजय वेलि, भिक्षु से गृहस्थ, गृहस्थ से भिक्षु, विश्वासघात आदि ऐतिहासिक नाटकों की रचना की। सामाजिक नाटकों में दलित कुसुम, पतित सुमन विश्व प्रेम, कर्तव्य और कर्ण प्रसिद्ध हैं। सामाजिक नाटककारों उपेन्द्रनाथ अश्क बहुत प्रसिद्ध हैं। उन्होंने स्वर्ग की झलक, छठा बेटा, कैद, उड़ान, अंजो दीदी आदि में सामाजिक समस्या का मार्मिक चित्र अंकित किया है।

बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कलाकार पं० उदयशंकर भट्ट ने अनेक ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक आदि नाटकों की रचना की है। उनके ऐतिहासिक नाटकों में विक्रमादित्य, दाहर, मुक्तिपथ, शक विजय आदि प्रसिद्ध हैं। सामाजिक नाटकों में कमला, अंतहीन अन्त, क्रांतिकारी, नया समाज, पार्वती आदि उल्लेखनीय हैं। पौराणिक नाटकों में अम्बा, सगर विजय प्रसिद्ध हैं।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक :

सन् १९५० के बाद हिंदी नाट्य-साहित्य में कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से नवीनता के दर्शन होते हैं। हिंदी नाटक की धारा स्पष्टतः तीन मोड़ों से 2014 से कर गुजरती है। पहले मोड़ पर जगदीशचन्द्र माथुर, मोहन राकेश, विष्णु प्रभाकर, विनोद रस्तोगी

डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल आदि की रचनाएँ हैं। माथुर का पहला नाटक कोणार्क 1951 में, शारदीया 1959 में और पहला राजा 1969 में प्रकाशित हुआ जिसमें संस्कृत नाट्य-शिल्प, लोकनाट्य शिल्प तथा पाश्चात्य नाट्य शिल्प का प्रयोग हुआ है।

मोहन राकेश ने आषाढ़ का एक दिन, लहरों का राजहंस और आधे-अधूरे लिखकर एक अलग पहचान बना ली। इस मोड़ की अन्य नाट्य-रचनाएँ हैं- नये हाथ, आजादी के बाद, बर्फ की मीनार, अंधा कुआँ और डॉक्टर।

दूसरा मोड़ साठोत्तरी प्रयोगशील नाटककारों का है जिसमें विपिनकुमार अग्रवाल, ज्ञानदेव अग्निहोत्री, अमृतराय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, लक्ष्मीकांत वर्मा आदि हैं। विपिन कुमार अग्रवाल के तीन अपाहिज में ग्यारह लघुनाटक हैं जिनमें जन-जीवन व्याप्त असंगतियों का नग्न चित्रण हुआ है। सक्सेना की बकरी, वर्मा की अपना-अपना जूता, रोशनी एक नदी है, अमृतराय की चिंदियों की झालर, शताब्दी और हम लोग आदि रचनाएँ इसी कोटि की हैं।

तीसरा मोड़ प्रयोगशील नाटकों का है। नई शृंखला 1970 के आसपास प्रारंभ होती है। नाट्य-रचना की इस प्रगतिशीलता को बल मिला बंगला, मराठी और कन्नड़ आदि के नाटकों के अनुवाद से। इस दिशा में जिन कलाकारों को विशेष प्रसिद्धि हुई, वे हैं- बंगला के बादल सरकार (एवं इन्द्रजित, बाकी इतिहास, पगला घोड़ा, अबू हसन, सारी रात), मराठी के विजय तेन्दुलकर (खामोश अदालत जारी है, घासीराम कोतवाल, गिद्ध) और कन्नड़ के गिरीश कर्नाड (तुगलक, हयवदन)। जिन हिंदी कलाकारों ने इस नाट्य प्रगति में योगदान दिया, उनमें उल्लेखनीय हैं- डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल, (रातरानी, दर्पन, कलंकी, मिस्टर अभिमन्यु, करफ्यू, अब्दुल्ला दीवाना, व्यक्तिगत, एक सत्य हरिश्चन्द्र) सुरेन्द्र वर्मा (तीन नाटक, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक) शंकरशेष (बिन बाती के दीप, फन्दी, बंधन, अपने-अपने, खजुराहो के शिल्पी, एक और द्रोणाचार्य), रमेश बक्षी (देवयानी का कहना है, तीसरा हाथी), मणि मधुकर (रस गंधर्व) मुद्राराक्षस (तिलचट्टा, तेन्दुआ, मरजीवा) नरेन्द्र कोहली (शंबूक की हत्या) आदि।

—— :o: ——